

## द. जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार ...!

- प्रा. संतोष मडकी

लेखनीय

किसी सफल साहित्यकार का साक्षात्कार लेने हेतु चर्चा करते हुए प्रश्नावली तैयार कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- साहित्यकार से मिलने का समय और अनुमति लेने के लिए कहें ।
- उनके बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रेरित करें ।
- साक्षात्कार संबंधी सामग्री उपलब्ध कराएँ ।
- विद्यार्थियों से प्रश्न निर्मित करवाएँ ।

रुला तो देती है हमेशा हार,  
पर अंदर से बुलंद बनाती है हार ।  
किनारों से पहले मिले मझधार  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

फूलों के रास्तों को मत अपनाओ ,  
और वृक्षों की छाया से रहो परे ।  
रास्ते काँटों के बनाएँगे निडर  
और तपती धूप ही लाएगी निखार ॥  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

सरल राह तो कोई भी चले,  
दिखाओ पर्वत को करके पार ।  
आएगी हौसलों में ऐसी ताकत,  
सहोगे तकदीर का हर प्रहार ॥  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

परिचय

**जन्म :** २५ दिसंबर १९७६ सोलापुर (महाराष्ट्र)

**परिचय :** श्री मडकी इंजीनियरिंग कॉलेज में सहप्राध्यापक हैं । आपको हिंदी, मराठी भाषा से बहुत लगाव है ।

**रचनाएँ :** गीत और कविताएँ, शोध निबंध आदि ।

पद्य संबंधी

**नवगीत :** प्रस्तुत कविता में कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन में हार एवं असफलता से घबराना नहीं चाहिए । जीवन में हार से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए ।





\* उजालों की आस तो जायज है,  
पर अँधेरों को अपनाओ तो एक बार ।  
बिन पानी के बंजर जमीन पे,  
बरसाओ मेहनत की बूँदों की फुहार ॥  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

जीत का आनंद भी तभी होगा,  
जब हार की पीड़ा सही हो अपार ।  
आँसू के बाद बिखरती मुस्कान,  
और पतझड़ के बाद मजा देती है बहार ॥  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... ! \*

आभार प्रकट करो हर हार का,  
जिसने जीवन को दिया सँवार ।  
हर बार कुछ सिखाकर ही गई,  
सबसे बड़ी गुरु है हार ॥  
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

### \* पद्यांश पर आधारित कृतियाँ

- (१) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :-  
(क) कवि ने इसे पार करने के लिए कहा है- नदी/पर्वत/सागर  
(ख) कवि ने इसे अपनाते के लिए कहा है-अँधेरा/उजाला/सबेरा  
(२) लय-संगीत निर्माण करने वाली दो शब्दजोड़ियाँ लिखिए ।  
(३) 'जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

### शब्द संसार

बुलंद (वि.फा.) = ऊँचा, उच्च  
मझधार (स्त्री.) = धारा के बीच में, मध्यभाग में  
हौसला (पुं.) = उत्कंठा, उत्साह  
बंजर (पुं. वि) = ऊसर, अनुपजाऊ  
फुहार (स्त्री.सं.) = हलकी बौछार/वर्षा

'करत-करत अभ्यास के जड़मति  
होत सुजान' इस विषय पर भाषाई  
सौंदर्यवाले वाक्यों, सुवचन, दोहे  
आदि का उपयोग करके निबंध/  
कहानी लिखिए ।

### कल्पना पल्लवन

### श्रवणीय

यू ट्यूब से मैथिलीशरण गुप्त की  
कविता 'नर हो न निराश करो मन  
को' सुनिए और उसका आशय  
अपने शब्दों में लिखिए ।

### पठनीय

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेंहूँ बनाम गुलाब'  
निबंध पढ़िए और उसका आकलन कीजिए ।

### संभाषणीय

पाठ्येतर किसी कविता की उचित आरोह-अवरोह  
के साथ भावपूर्ण प्रस्तुति कीजिए ।

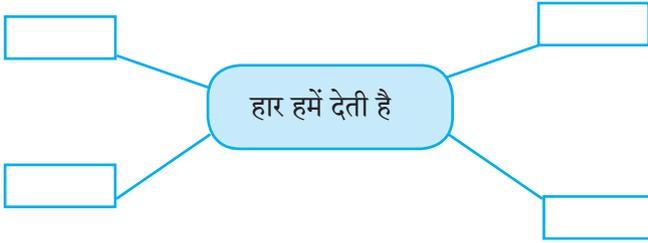


- (१) 'हर बार कुछ सिखाकर ही गई, सबसे बड़ी गुरु है हार' इस पंक्ति द्वारा आपने जाना .....
- (२) कविता के दूसरे चरण का भावार्थ लिखिए ।
- (३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :-
- (क) फूलों के रास्ते  
(ख) जीत का आनंद मिलेगा  
(ग) बहार  
(घ) गुरु

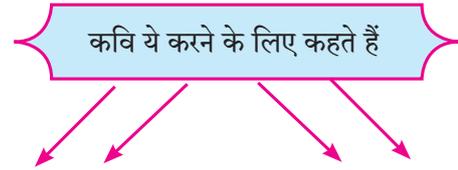
(५) उचित जोड़ मिलाइए :-

- | अ                     | आ                 |
|-----------------------|-------------------|
| i) इन्हें अपनाना नहीं | - तकदीर का प्रहार |
| ii) इन्हें पार करना   | - वृक्षों की छाया |
| iii) इन्हें सहना      | - तपती धूप        |
| iv) इससे परे रहना     | - पर्वत           |
|                       | - फूलों के रास्ते |

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :



(६) आकृति पूर्ण कीजिए :



### भाषा बिंदु

निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए :-

### शुद्ध - वाक्य

- अशुद्ध वाक्य
1. वृक्षों का छाया से रहे परे ।
  2. पतझड़ के बाद मजा देता है बहार ।
  3. फूल के रास्ते को मत अपनाओ ।
  4. किनारों से पहले मिला मझधार ।
  5. बरसाओं मेहनत का बूँदों का फुहार ।
  6. जिसने जीवन का दिया सँवार ।

- शुद्ध वाक्य
1. \_\_\_\_\_
  2. \_\_\_\_\_
  3. \_\_\_\_\_
  4. \_\_\_\_\_
  5. \_\_\_\_\_
  6. \_\_\_\_\_



.....  
.....  
.....